समझना और सीखना
समानता व अंतर

लक्ष्मी नारायण मित्तल*

आम व्यक्ति का जीवन हो या किसी विशिष्ट व्यक्ति का जीवन, 'समझ' और 'सीख' दोनों ही शब्द एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में दोनों के ही जीवन में अभिन्न अंग के रूप में शामिल हैं। जीवन का निर्वाह भर करना है, तो एक अलग बात है, परंतु जीवन को रचनात्मक रूप देना है तो 'समझ' और 'सीख' के बगैर काम नहीं चलेगा। 'सीख' तो स्वत: आरंभ हो जाती है, प्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए और उनके साथ 'समझ' का भी पुट हो, तो बात विलक्षण हो जाती है। प्रस्तुत लेख में 'सीख' और 'समझ' पर एक समझ बनाने का प्रयास किया गया है। अध्यापकों के साथ चर्चा कर कैसे इन शब्दों को समझा जाए और विद्यालयी शिक्षण में इनके महत्त्व को जाना जाए इन्हीं विचारों की प्रस्तुति इस लेख में है।

प्रशिक्षक-शिक्षकों के समक्ष विचार हेतु समझना और सीखना दो शब्दों को रखें। शिक्षकगण इस बात पर विचार करें कि क्या वे इन दोनों शब्दों को एक-दूसरे का पर्यायवाची मानते हैं या इनमें भेद करते हैं। यदि भेद करते हैं तो शिक्षकों को उसे स्पष्ट करने को प्रेरित किया जाए। यदि यहाँ चर्चा होने लगे तो प्रशिक्षक को सुगमकर्ता की भूमिका निभानी चाहिए तो उन्हें 'समझना' और 'सीखना' में क्या बारीक भेद है इसकी जानकारी निम्नवत दी जानी चाहिए।

सर्वप्रथम यह स्पष्ट करना कि 'समझदार होना' और 'साक्षर होना' बिल्कुल भिन्न बातें हैं

शिक्षकों के समक्ष दो बातें रखी जाएँ—समझदार व्यक्ति और साक्षर व्यक्ति। फिर उनसे पूछा जाए कि क्या वे दोनों को एक ही मानते हैं या अलग-अलग। निष्कर्ष यही निकल कर आएगा कि दोनों का अर्थ अलग-अलग है, समझदार व्यक्ति साक्षर हो भी सकता है और नहीं भी या फिर व्यक्ति में बहुत से हुनर भी हो सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वह समझदार ही है। वह समझदार हो भी सकता है और नहीं भी।

दैनिक जीवन के कुछ उदाहरणों से 'समझना' और 'सीखना' के बीच के फर्क को उजागर करना

प्रशिक्षक, बोर्ड पर निम्न बिंदुओं को लिख सकते हैं, जैसे—हल चलाना, गाड़ी चलाना, बच्चों को पढ़ाना, व्यवहार करना, खाना बनाना, संबंधी या रिश्तों के साथ निर्वाह करना, गणित के सवाल लगाना आदि।

* पूर्व *प्राचार्य* एवं *प्रोफ़ेसर*, एच-899 ओल्ड हाउसिंग बोर्ड, मुरैना 476 001

फिर शिक्षकों से कहा जाए कि बोर्ड पर लिखी बातों को वे दो श्रेणियों में बाँट दें। एक श्रेणी में उनको रखें जिन्हें वे मूलत: समझने (समझदारी) की बात मानते हैं और दूसरी श्रेणी में उन्हें रखें जिन्हें वे मूलत: सीखने से संबंधित मानते हैं। जब प्रशिक्षु-शिक्षक ऐसा कर लें तो उनसे यह पूछा जाए कि आखिर उनके द्वारा किए गए वर्गीकरण का आधार क्या है?

देखा गया है कि 'समझने' की श्रेणी में 'व्यवहार करना' और 'संबंध या रिश्तों का निर्वाह करना' रखा जाता है। प्रशिक्षक इन बिंदुओं पर कुछ इस प्रकार अपनी बात रख सकता है कि हमारे लिए सबसे मुश्किल कार्य सही व्यवहार करना और संबंधों का ठीक-ठीक निर्वाह करना ही होता है। हमारी सबसे बड़ी विफलता इसी क्षेत्र में हम महसूस करते हैं और इसका कारण यही है कि यह सीखने से नहीं आता। यदि यह सीखने से आने वाली चीज़ होती तो एक निश्चित उम्र आने पर या एक निश्चित समय तक लगातार करते रहने के कारण स्वत: ही हमें व्यवहार करना और संबंधों का निर्वाह करना आ जाता। ऐसा होता नहीं है, ऐसा हम सभी अपने-अपने अनुभवों से जानते हैं।

जीवन के मूल प्रश्नों से जोड़कर 'समझने' और 'सीखने' का भेद समझाना

प्रशिक्षक-शिक्षकों के समक्ष जीवन के दो मूल प्रश्नों को रखें —

- मैं जीवन में क्या चाहता हूँ? (जीवन के लक्ष्य से संबंधित प्रश्न)
- जीवन में जो चाहता हूँ उसे कैसे प्राप्त करूँगा? (जीवन के कार्यक्रम से संबंधित प्रश्न)

फिर प्रशिक्षक कह सकता है कि जीवन से संबंधित ये दो मूल प्रश्न हैं। 'समझने' और 'सीखने' की आवश्यकता के मूल में यही दो प्रश्न हैं। हमें आखिर यही दो बातें तो मूलत: समझनी हैं कि मैं चाहता क्या हूँ और उसे कैसे हासिल करूँगा। समझना विचार प्रधान होता है यानि समझना विचार और बुद्धि के स्तर पर होने वाली चीज़ है और समझ के क्रियान्वयन की जब बात आती है तब शरीर की कर्मेंद्रियों और ज्ञानेंद्रियों की भूमिका प्रधान हो जाती है। उस क्रम में बहुत से हुनर सीखने की आवश्यकता पड़ती है। हुनर के मामले में चुनाव की स्वतंत्रता होती है।

'क्यों' और 'कैसे' जैसे प्रश्नवाचक शब्दों के जरिए 'समझना' और 'सीखना' के भेद पर बात रखना

प्रशिक्षक यह भी कह सकते हैं कि, समझने और सीखने का भेद हम 'क्यों' और 'कैसे' जैसे प्रश्नवाचक शब्दों के जरिए भी समझ सकते हैं। जैसे — 'मैं क्यों जी रहा हूँ' को समझने की आवश्यकता होती है। ऐसे ही 'मैं गणित क्यों पढ़ूँ या सीखूँ' को भी समझने की आवश्यकता है। 'कैसे' के उत्तर में जब हम जाएँगे, जैसे कि 'मैं कैसे जिऊँ' या 'मैं भाषा का अच्छा ज्ञाता कैसे बनूँ' तो समझ के साथ-साथ सीखने की भूमिका प्रधान हो जाती है। ऐसा दिखता है कि 'क्यों' का जवाब हमारे पास नहीं होता, लेकिन 'कैसे' का जवाब हम अपने आस-पास के लोगों के जीने या करने में देखते ही रहते हैं, और वहीं से सीख भी लेते हैं। इसी कारण हुनरमंद लोग तो बहुत मिल जाते हैं, परंतु समझदार लोग मुश्किल से ही मिलते हैं।

'समझना' और 'सीखना' के संदर्भ में (विशेष रूप से समझने और समझाने के लिए) संवाद के महत्त्व को रखना

'समझना' और 'सीखना' के भेद को स्पष्ट कर देने के बाद प्रशिक्षक निम्न रेखाचित्र शिक्षक-प्रशिक्षुओं के समक्ष रख सकता है —

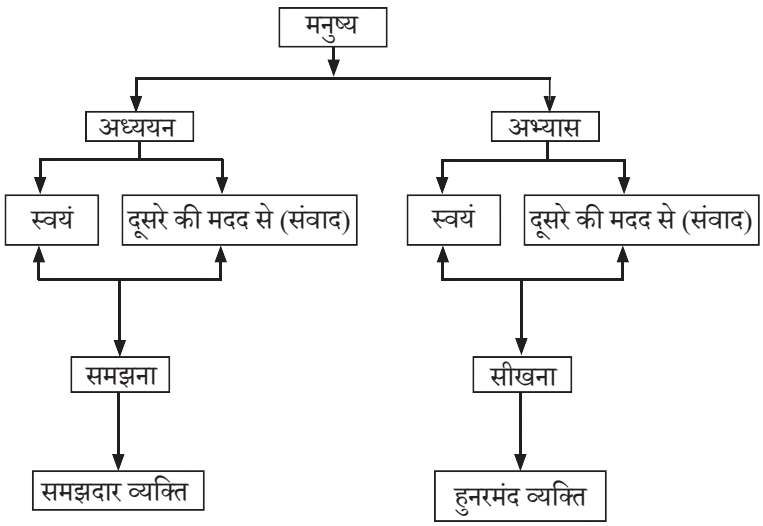

इस रेखाचित्र को समझाने के क्रम में प्रशिक्षक यह बात रख सकता है कि, 'समझने और सीखने' के संदर्भ में ही अध्ययन और अभ्यास शब्दों के बारे में भी स्पष्टता की आवश्यकता है। अध्ययन और अभ्यास या तो स्वयं कर सकते हैं या दूसरों की मदद से। दुनिया में ऐसे लोग हुए ही हैं जिन्होंने स्वयं ही सीखा और समझा। लेकिन आम आदमी को या बहुसंख्यक मनुष्यों को तो दूसरों की मदद की ज़रूरत पड़ती ही है। विद्यालय को इसी दृष्टि से देख सकते हैं। शिक्षक अध्ययन और अभ्यास हेतु मदद करने के लिए ही तो नियुक्त होते हैं। शिक्षक द्वारा यह मदद पहुँचाने का सबसे कारगर माध्यम संवाद है। ऐसा हम स्वयं भी स्वीकार करते हैं कि हमें अपने साथ संवाद ही सबसे अधिक स्वीकार होता है। विद्यार्थी को भी संवाद ही सर्वाधिक स्वीकृत होता है और वही हम सबसे कम करते हैं। संवाद की विशेषता यह है कि इसमें दूसरों को समझाने के साथ-साथ समझने का कार्य भी होता है और दूसरे समझे बिना समझाना तभी हो सकता है जब समझने वाला स्वयं तत्पर हो। विद्यालय में तो शिक्षक को विद्यार्थी की यह तैयारी भी करानी पड़ती है कि वह समझने के लिए तैयार हो जाए। यहाँ संवाद की ही विशेष भूमिका होती है।

'समझ के करो' और 'करके सीखो' जैसे सूत्र देना

प्रशिक्षक प्रतिभागियों के सामने 'समझ के करो' और 'करके सीखो' के ये दो सूत्र रख सकते हैं। इस संदर्भ में प्रशिक्षु को बताएँ कि सभी कार्य समझ कर ही किये जाने चाहिए यानि क्यों कर रहा हूँ, यह स्पष्ट होना चाहिए। करने के लिए उस कार्य विशेष का कौशल सीखना ज़रूरी है जो कि

करके या अभ्यास से ही आता है। यहाँ यह भी समझने की आवश्यकता है कि समझने में भी हुनर की भूमिका होती है, जिसमें भाषा यानि अपने विचार-भावों को रख पाना एक मुख्य हुनर है। प्रकृति में यह व्यवस्था है कि यही हम सबसे पहले सीखते हैं। हुनर सीखे लेने के बाद उसका उपयोग समझ पर ही निर्भर करता है।

'समझ' और 'हुनर के पूरक' संबंध की बात करना

प्रशिक्षक, प्रशिक्षु के सामने यह बात भी रख सकते हैं कि 'समझने और सीखने (हुनर)' का एक-दूसरे से पूरकता का रिश्ता है। हुनर समझने में मदद करता है तो समझ हुनर के सदुपयोग का आधार बनती है। समझ का क्रियान्वयन हुनर से ही हो सकता है। शिक्षक को यह स्पष्टता रहनी चाहिए कि वह दोनों पक्षों पर ध्यान दें और इस कारण शिक्षण में समग्रता आएगी।

निष्कर्ष

समझना सीखना एक-दूसरे के पूरक हैं। समझने से चीज़ें सीखना आसान हो जाता है। बिना समझे कोई भी कार्य कठिन होता है। विद्यालयी शिक्षा में भी समझ कर पढ़ना और पढ़कर समझना महत्वपूर्ण होता है। अर्थात् पढ़ना ही समझना है।